नवीं पनीरी
भाग - 1
Bhai Vir Singh Sahitya Sadan
ਭਾਈ ਵੀਰ ਸਿੰਘ ਸਾਹਿਤ ਸਦਨ

नवीं पनीरी

बाल कथाएँ गुरु गोबिंद सिंह

भाग पहला

भाई वीर सिंह साहित्य सदन
भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्किट
नई दिल्ली-110001

नवीं पनीरी
बाल कथाएँ गुरु गोबिंद सिंह (भाग पहला)

प्रथम संस्करण, 2007
आधार : गुरु बालम साखियाँ -भाई वीर सिंह
साखीकार : डॉ. ज्ञानी भजन सिंह
अनुवाद : डॉ. गुरचरन सिंह
कलापक्ष : बोध राज
प्रकाशक : भाई वीर सिंह साहित्य सदन,
भाई वीर सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110001
दूरभाष 23363510
फैक्स 23744347
मुद्रक : सुंदर प्रिंटर्स
2477-79, नलवा स्ट्रीट, पहाड गंज
नई दिल्ली-110055
मूल्य : 55 रुपये

पटना में अवतार लिया

गुरु गोबिंद सिंह जी सिक्खों के दसवें गुरु हैं। गुरु नानक देव जी की ज्योति इनमें प्रकाशित हुई, इसलिए इन्हें दसवीं ज्योति भी कहते हैं।

गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म (अवतार) 1666 ई० को बिहार राज्य की राजधानी पटना नगर में हुआ। आप नवम् गुरु तेग बहादुर जी की एकलौती सन्तान थे। गुरु जी की माता का नाम माता गुजरी था।

श्री गुरु तेग बहादुर जी ने गुरु गद्दी पर बैठने के उपरान्त एक नया नगर आनंदपुर बसाया। उसके बाद वे भारत की यात्रा पर चल पड़े। जिस तरह गुरु नानक देव जी ने सारे देश का भ्रमण किया था, उसी तरह उन्हें भी आसाम जाना पड़ा। स्थान-स्थान पर सिख संगत स्थापित हो चुकी थी। गुरु तेग बहादुर जी जब अमृतसर से आठ सौ मील दूर गंगा नदी के तट पर बसे शहर पटना पहुँचे तो सिख संगत ने बहुत प्यार प्रकट किया तथा उनसे विनती की कि वे लम्बे समय तक पटना में ठहरें। नवम् गुरु अपने परिवार को वहीं छोड़कर बंगाल होते हुए आसाम की ओर चले गये।

पटना में वे अपनी माता नानकी, सुपत्नी माता गुजरी तथा कृपाल चंद को छोड़ गये। कृपाल चंद जी माता गुजरी के भाई थे। पटना की संगत ने गुरु परिवार के रहने के लिए एक सुन्दर भवन का निर्माण करवाया, जहाँ गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म हुआ। तब गुरु तेग बहादुर जी को आसाम में सूचना भेजी गई। पंजाब में जब गुरु तेग बहादुर जी के घर सुन्दर बालक के जन्म की सूचना पहुँची तो सिख संगत ने बहुत खुशी मनाई।
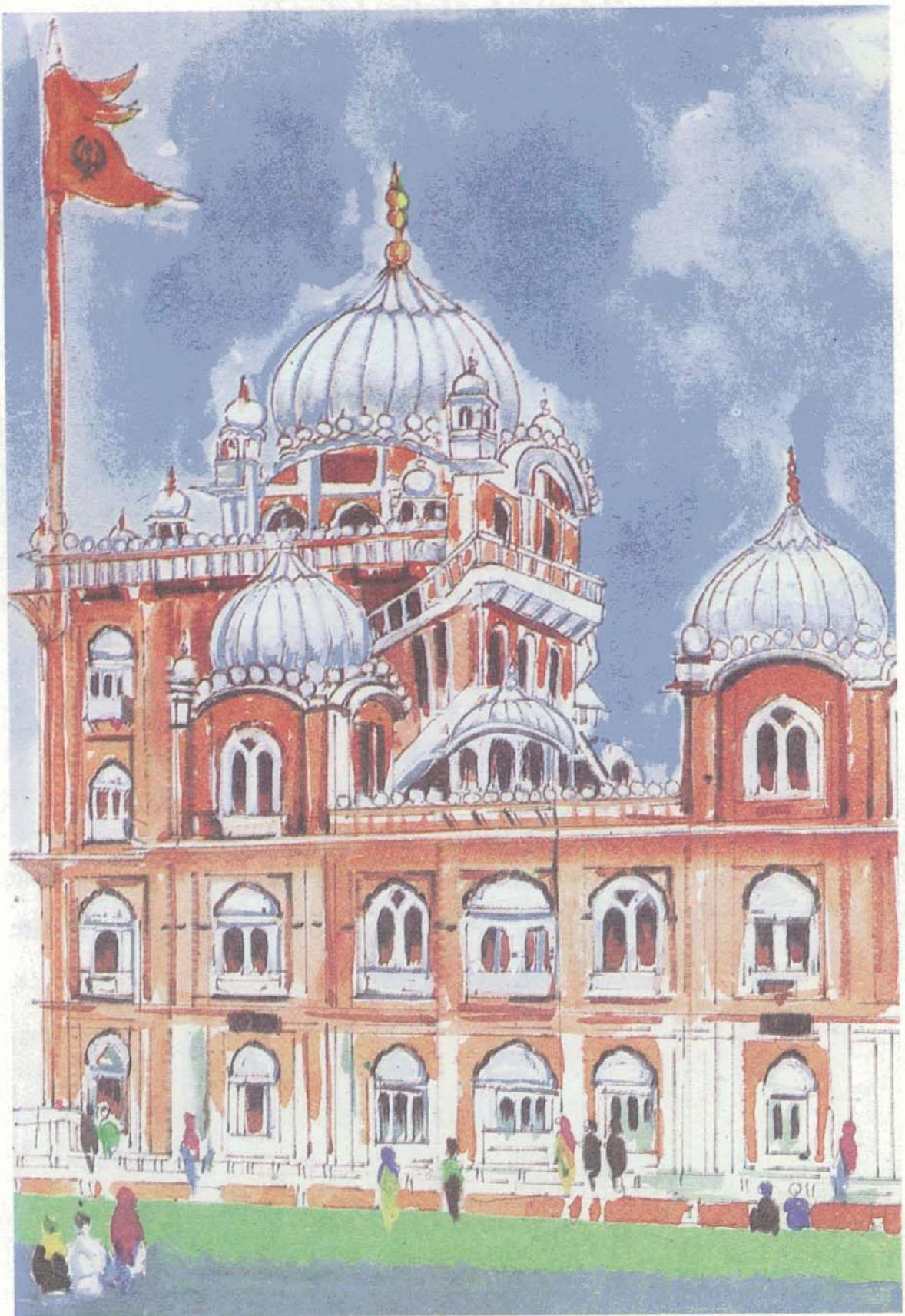
भीखण शाह ने दर्शन किये

करनाल के समीप सिआणा गाँव में एक मुसलमान संत फकीर भीखण शाह रहता था। उसने परमात्मा की इतनी भक्ति तथा निष्काम तपस्या की थी कि वह स्वयं परमात्मा का रूप लगने लगा था। पटना में जब गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म हुआ उस समय भीखण शाह अपने गाँव में समाधि लगा कर बैठा हुआ था। उसी अवस्था में उसे प्रकाश की एक किरण दिखाई दी जिसमें उसने एक नए जन्मे बालक का बिंब भी देखा। वह समझ गया कि दुनिया में कोई परमात्मा का प्रिय पीर अवतरित हुआ है।
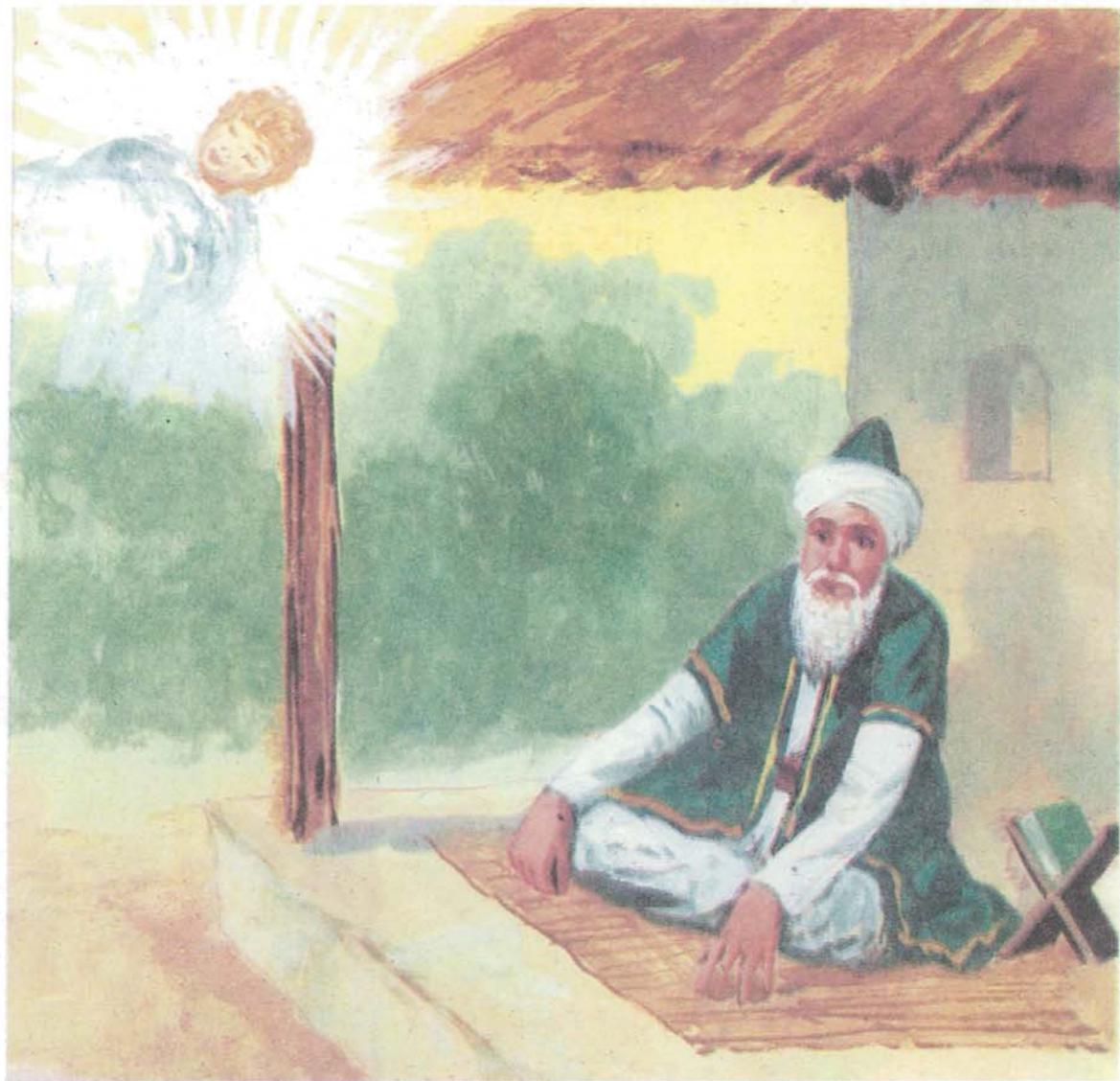
यह प्रकाश की किरण उसने अपने देश के पूर्व दिशा में देखी। उसने जो स्थान गंगा के किनारे देखा वह पटना ही था। सूफी भीखण शाह ने परमात्मा के इस नूर के दर्शन करने का मन में निर्णय लिया। अपने डेरे का प्रबन्ध अपने साथियों को सौंप कर तथा अपने कुछ आत्मीय जनों को साथ लेकर वह पूर्व दिशा की ओर चल पड़ा। सैंकड़ों मीलों की यात्रा पैदल करते हुए वह अन्ततः पटना पहुँच गया। वहाँ जाकर उसने पता लगवाया कि किस महापुरुष के परिवार में बालक ने जन्म लिया है। पूरा पटना गुरु के घर को जानता था। इसलिए भीखण शाह को घर ढूंढने में समय नहीं लगा।

द्वार पर पहुँच कर जब उसने बालक के दर्शन करने की इच्छा प्रकट की तो मामा कृपाल चंद बालक को बड़े प्यार से उठा कर बाहर ले आये। दर्शन करने के लिए और संगत भी आई हुई थी। भीखण शाह ने माथा टेका तथा जो वस्तुएँ भेंट देने के लिए वह लाया था, वे आगे रखीं। वह परखने के लिए दो कुल्हड़ (मिटट्ी के बर्तन) भी लाया था। उनमें भी कुछ वस्तुएँ थीं। दोनों हाथों में कुल्हड़ पकड़ कर उसने आगे किए। पूरी संगत तथा भीखण शाह के शिष्य हैरान हो गये। जब कुछ महीनों के बालक गोबिंद राय ने अपने छोटे-छोटे हाथ आगे बढ़ा कर उन दोनों कुल्हड़ों पर रख दिये। भीखण शाह फिर से बालक के चरणों पर गिर पड़ा तथा दोनों कुल्हड़ लेकर बाहर आ गया।

भीखण शाह के शिष्यों तथा पूरी संगत ने उससे कुल्हड़ों के रहस्य के सम्बन्ध में पूछा तो उसने बताया कि जब उसे परमात्मा के नूर के प्रकट होने का ज्ञान हुआ था तो उस समय उसे लगा था कि वह किसी एक पक्ष का समर्थन करेगा तथा दूसरे का नाश करेगा। मैंने सोचा कि वह हिन्दुओं का साथ देगा या मुसलमानों का। इसी प्रश्न को लेकर मैंने विशेष रूप से ये दो कुल्हड़ तैयार करवाये थे तथा उन्हें बालक के आगे रखा। परमात्मा की इस ज्याति ने दोनों पर हाथ रख कर मेरे प्रश्न का उत्तर दे दिया कि मैं दोनों की रक्षा करूँगा। मैं समझ गया कि यह बालक अन्याय तथा अत्याचार का सामना करेगा तथा उसे नष्ट करेगा। अधिकार, न्याय तथा सत्य पर डटे रहने वाले हिन्दुओं तथा मुसलमानों का साथी बनेगा। उनका नेतृत्व करेगा।

कुछ दिनों में ही इस घटना की चर्चा दूर-दूर तक होने लगी तथा सैंकड़ों मीलों से लोग इस अद्भुत बालक के दर्शनों के लिए आने लगे।

बचपन तथा बाल-कौतुक

जन्म के पहले साल से ही सभी को यह स्पष्ट नज़र आने लगा था कि यह कोई साधारण बालक नहीं है। अन्य बालकों से यह विलक्षण है। साधारण बालक भूख लगने पर या माँ की गोद से उतार कर जब उन्हें चारपाई पर लिटाया जाता है तो वे रोते हैं। पर बालक गोबिंद राय कभी भी रोते नहीं थे। उनका चेहरा सदा खिला रहता तथा जब भी कोई उन्हें आवाज देता तो वे मुस्कुराते हुए इधर-उधर देखते।

बैठना सीखने के बाद जब घिसटना सीखा तब भी वे अन्य बच्चों की तरह कमर झुका कर घुटनों के बल नहीं घिसटते थे। आप बैठे-बैठे ही घिसटना सीखे तथा बैठ कर ही घिसटते। जब चलना सीखा तो एकदम ही चलने लगे। अन्य बच्चों की तरह चलते हुए वे कभी भी नहीं गिरे। इस तरह सीधा चलने में उनका आत्म विश्वास प्रकट होता है। ये बातें सभी से भिन्न थीं।

जब और बड़े हुए अर्थात जब तीन साल के हुए तो वे आस-पड़ौस के बच्चों को इकट्ठा कर लेते। अपने खिलौने उनमें बाँट देते। कभी बच्चों को एक पंक्ति में चलाते तथा उनका नेतृत्व करते हुए उन्हें एक साथ कदम उठाने के लिए प्रेरित करते। ऐसा करना उनका शौक था।

मामा कृपाल चंद हर समय आपके साथ रहते तथा आपका ध्यान रखते। एक दिन नदी किनारे खेलने गये तो अपने मामा से आँख बचा कर पानी में चले गये। मामा कृपाल चंद ने देखा तो घबड़ा कर पीछे भागे पर वे यह देखकर विस्मित हुए कि बालक गोबिंद राय तैरते हुए किनारे पर आ गये। घर आकर जब इस घटना के बारे में बताया तो माता जी ने बड़ी चिंता व्यक्त की। पर मामा कृपाल चंद ने यह विश्वास दिलवाया कि वे जन्म से ही तैरना सीख कर आये हैं। इन्होंने हजारों-लाखों को तारना (पार लगाना) है। इसलिए वे स्वयं नदी में कैसे डूब सकते हैं।
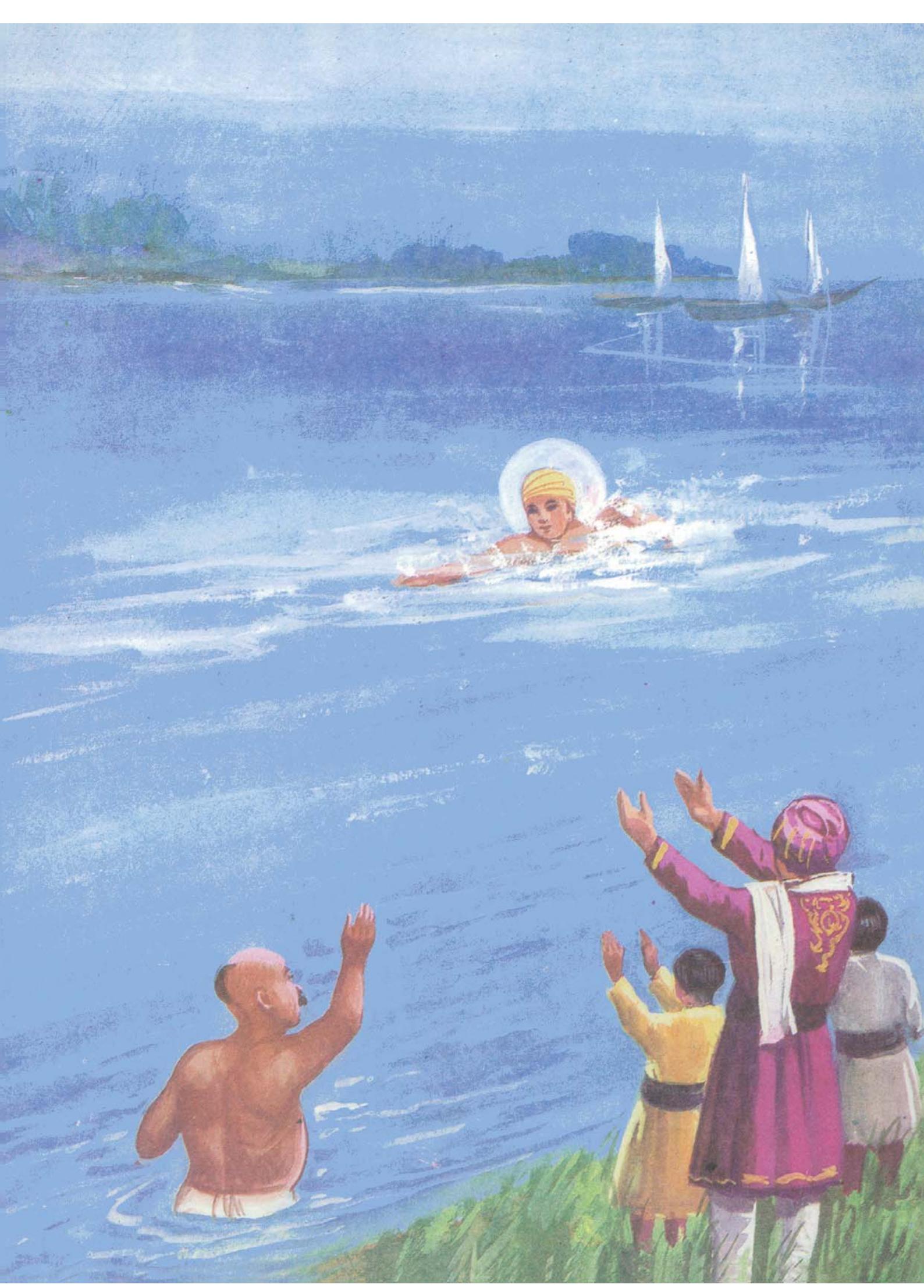
कलगियाँ वाला पातशाह

बाल रूप में गुरु साहिब बहुत ही सुन्दर लगते थे। उन्हें देखकर सभी मोहित हो जाते थे। उनके माता जी तथा दादी जी उनको सुन्दर वस्त्र पहनाते। उनकी माता को बहुत समय से एक पुत्र की इच्छा थी। स्वभावतः वे उस पर स्नेह-प्यार की वर्षा करते तथा बड़े स्नेह से उनका पालन-पोषण करते। पटना के कई धनाढ्य व्यक्ति गुरु साहिब के श्रद्धालु थे। धनाढ्य औरतें बाल-गुरु को सुन्दर वस्त्र तथा खिलौने भेंट में देकर जातीं। उनके माता जी अपने पुत्र को एक बलवान नवयुवक के रूप में देखना चाहती थीं। वे बाल गुरु के सिर पर सुन्दर पगड़ी पहनातीं।

एक बार एक श्रद्धालु स्त्री उनके लिए बहुमूल्य परों से बनी एक कलगी लेकर आयी। उसमें कीमती मोती लगे हुए थे। माता जी को वह कलगी बहुत पसन्द आई। उन्होंने वह कलगी गुरु साहिब की पगड़ी पर लगा दी। कलगी लगाकर बाल गुरु बाहर खेलने के लिए चले गये। उसी दिन से लोग उन्हें 'कलगीयाँ वाला पातशाह' कहने लगे।
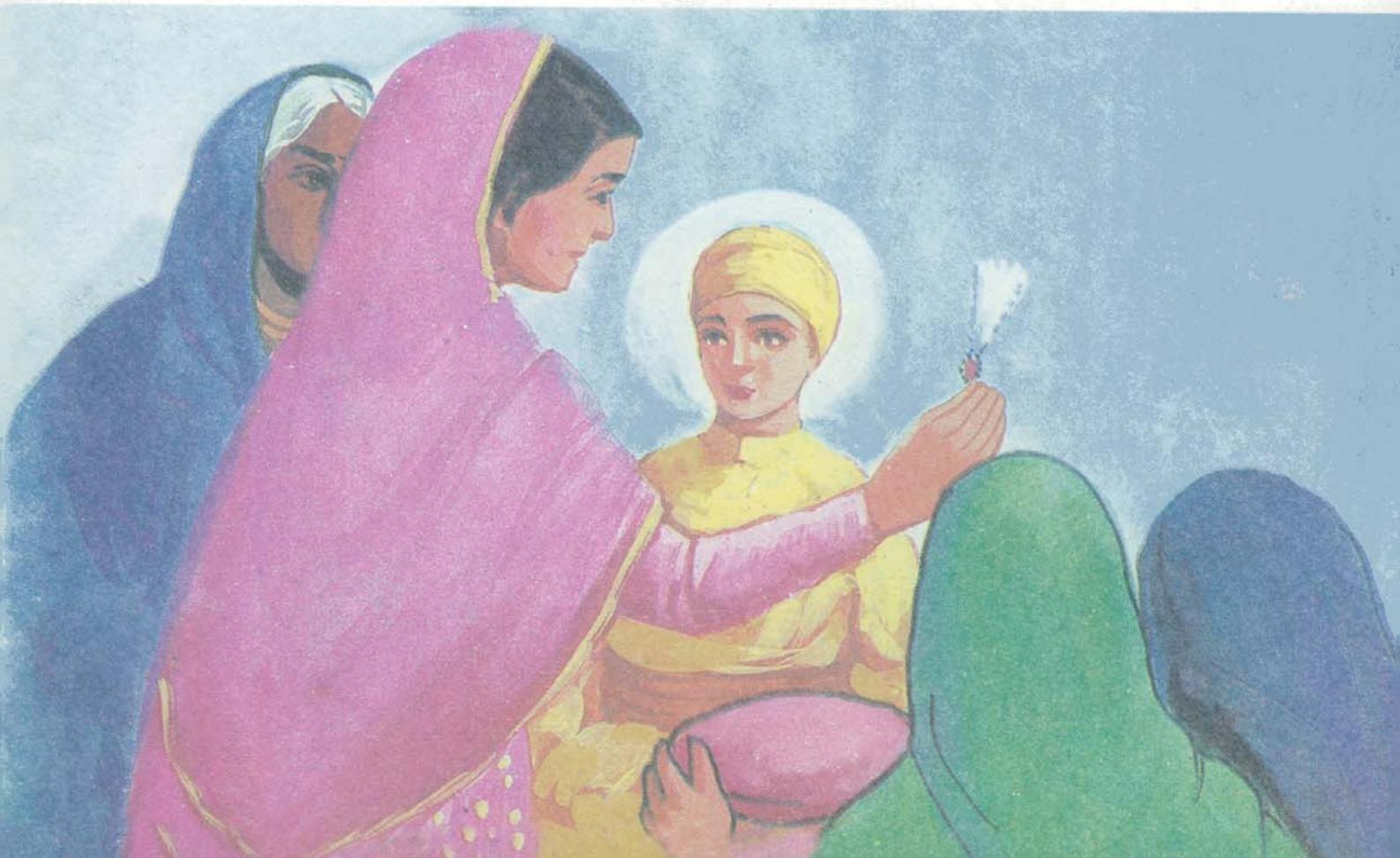
पाँच पुत्रों का आशीर्वाद दिया

पटना के आम लोगों की जबान पर यह बात थी कि गुरु तेग बहादुर जी के सुपुत्र के मुख से जो भी बात निकलती है, वह अवश्य पूरी हो जाती है। श्रद्धालु सिख अपनी इच्छाओं-आशाओं के साथ बालक गोबिंद सिंह के पास आने लगे।

एक दिन कुछ श्रद्धालु औरतें आईं तथा बाहर खेल रहे बालक गोबिंद सिंह की प्रेम से प्रशंसा करने के उपरान्त कहने लगीं कि उनके साथ एक बीबी (स्त्री) आई है जिसकी इच्छा है कि उसकी गोद में भी बच्चा खेले। आप आशीर्वाद दें। बालक गोबिंद सिंघ ने समझदार व्यक्ति की तरह कहा कि यदि इसके भाग्य में हुआ तो बेटा हो जायेगा। वह पुत्र को जन्म दे, मैं ऐसा क्यों कहूँ।

वह बीबी एक दिन फिर कुछ औरतों को लेकर माता गुजरी के पास आई और कहने लगीं कि वे गुरु जी से आशीर्वाद ले दें। माता गुजरी जी ने बेटे को बड़े प्यार से पास बुलाया और कहा कि ये आपके गुरुदेव पिता के सिख (शिष्य) हैं। इन्हें आशीर्वाद दो कि इनके घर बेटा हो।

'आशीर्वाद ऐसे तो नहीं मिलता है' बालक गोबिंद सिंघ ने उत्तर दिया, 'ये बेड़ियों (किश्तियों) वाले हैं। एक सुन्दर सी बेड़ी (नाव) मुझे दे दें तो एक नहीं, पाँच बेटे ले लें।' वे सब बहुत प्रसन्न हुईं। बीबी ने माथा टेकते हुए कहा कि 'एक सुन्दर नाव आपको मिल जायेगी'। बालक गोबिन्द सिंघ ने हाथ में पकड़ी हुई छड़ी उसके सिर पर रख दी।

घर जाकर उसने अपने पति को बताया तो उसने तुरन्त एक सुन्दर नाव बालक गोबिंद सिंघ को भेंट में दे दी। कुछ समय के बाद उसके घर लड़का हुआ और फिर एक के बाद एक पाँच बेटों का जन्म हुआ।

माई से अनोखी खेल

घर के पास ही एक निर्धन माई (औरत) रहती थी जो चरखा कात कर गुजारा करती थी। बड़ी कठिनाई से उसे दो वक्त का अन्न मिलता था। बाल गोबिंद सिंघ जी जब उधर से गुजरते तो उसका काता हुआ सूत तथा पूनियाँ बिखेर देते। यह शरारत करके वे घर आ जाते। दूसरी बार जब उन्होंने ऐसा किया तो वह औरत शिकायत करने माता गुजरी जी के पास आई। माता जी ने पर्याप्त धन देकर उसे खुश कर दिया और वह आशीर्वाद देती हुई वापस चली गई। ऐसा कई बार हुआ। अन्त में माता जी ने पूछा– 'बेटा जी, आप ऐसा क्यों करते हैं?' तो मुस्करा कर बालक गोबिंद सिंघ जी ने कहा– 'मैं तो उसकी निर्धनता दूर कर रहा हूँ। आप उसे जो दे रहे हैं वह उसकी कई महीनों की कमाई से भी अधिक है।' माता जी समझ गये कि यह अनोखा कौतुक वे किसी उद्देश्य से ही कर रहे हैं।

राजा फतह चंद को निहाल (प्रसन्न) किया

गंगा के किनारे एक पंडित शिव दत्त तप करता था। एक दिन समाधि में उसने देखा कि नदी तट पर बच्चों के साथ खेल रहा बाल गोबिंद साधारण बालक नहीं है, बल्कि परमात्मा का विशेष पुत्र है। उसने एक कोढ़ी को धक्का देकर नदी में फेंकते हुए भी देखा जो स्नान करने के उपरान्त रोग मुक्त हो गया। इस तरह वह बाल गोबिंद का श्रद्धालु हो गया।

उसका एक मित्र, फतह चंद मैनी जो नगर का धनाढ्य तथा बड़े भू-भाग का स्वामी था अपनी पत्नी के साथ घाट पर शिव दत्त के पास आया और कहने लगा– 'परमात्मा से हमारे लिए प्रार्थना करो कि वह हमें एक बेटा दे। हमारे पास बहुत जमीन-जायदाद है पर कोई वारिस नहीं है।' पंडित ने उत्तर दिया– 'मैंने तो कई बार परमात्मा से प्रार्थना की है पर मेरी प्रार्थना सुनी नहीं गई। अब अपने शहर में परमात्मा का विशेष पुत्र जो सभी शक्तियों का स्वामी है, आया है। वह गुरु तेग बहादुर जी का बेटा है। उसे याद करो, वह आपकी इच्छा अवश्य पूरी करेगा। वह 'बाला प्रीतम' है। बस उसी दिन से फतह चंद और उसकी पत्नी बाल गोबिंद को दिन रात याद करने लगे। और 'बाला प्रीतम' की हर समय रट लगाने लगे।

काफी दिनों बाद जब एक दिन बड़े विश्वास के साथ उन्होंने याद किया; 'बाला प्रीतम' का स्मरण किया तो बालक गोबिंद सिंघ आठ-दस बालकों सहित एक दिन फतह चंद के घर पहुँच गये। वे समाधि में बैठी फतह चंद की पत्नी की गोद में जाकर बैठ गये और हँसते हुए कहा– 'माँ।' रानी की आँख खुली उसने दर्शन किये और निहाल (प्रसन्न) हो गई। पहली बार बाल गोबिंद के दर्शन करके उसका मन सन्तुष्टि तथा प्रसन्नता से भर गया।
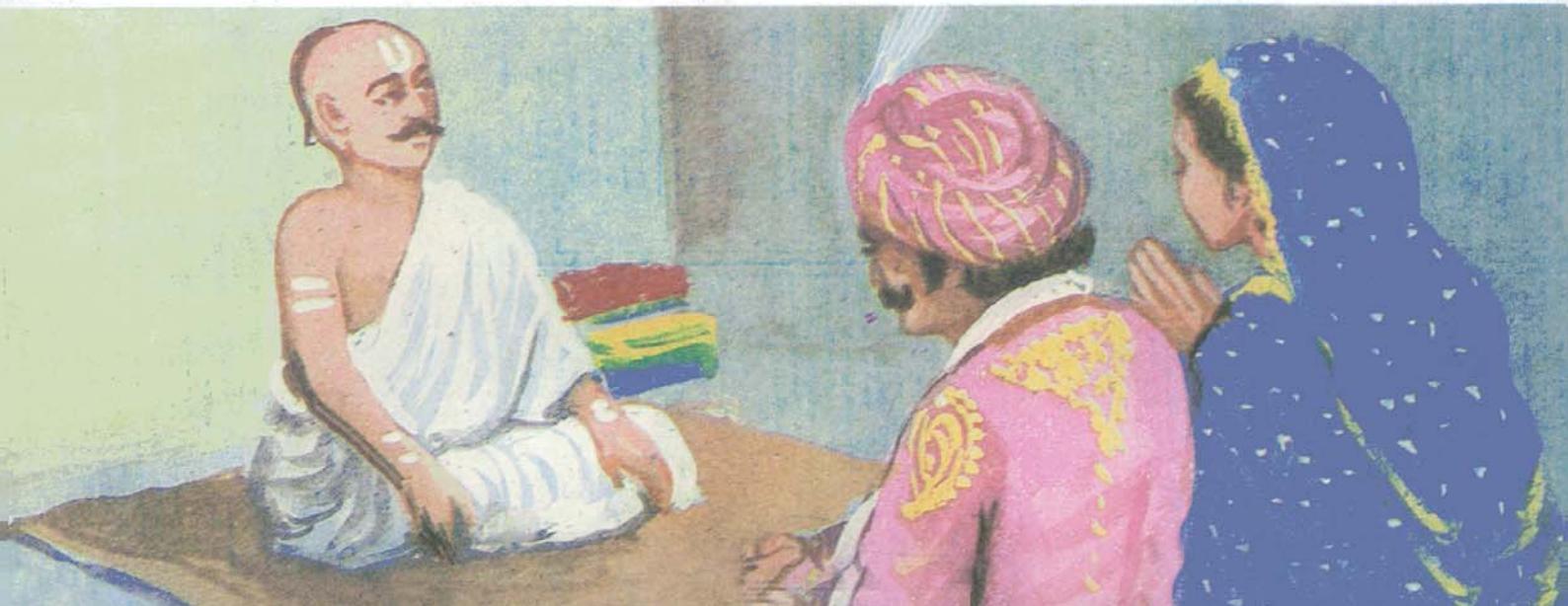
बाल गोबिंद ने और कौतुक दिखाया और कहने लगे– 'माँ, भूख लगी है।' 'अभी लो' कह कर उसने पति से कहा– 'तुरन्त मिठाई मँगवाओ तथा बाहर जो भी फल मिले ले आओ।'

'हमने तो वह छोले-पूरी खानी है जो आपने अन्दर बना कर रखी हैं।' बाल गोबिंद ने कहा।
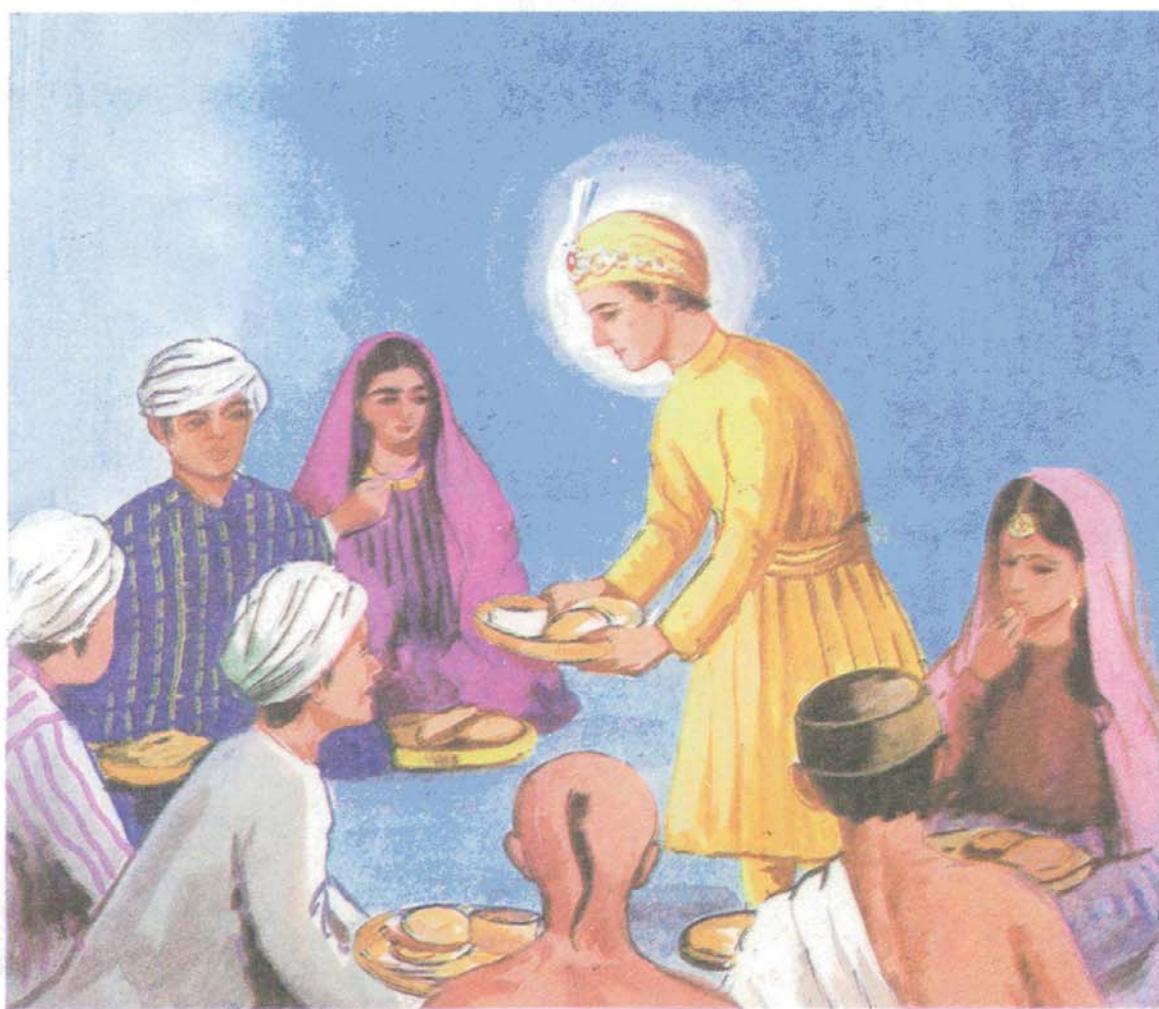
'लो जी' उसने झटपट छोले-पूरियाँ लाकर उनके आगे रख दीं। बाल गोबिंद ने अपने पवित्र हाथों से सभी को परोसीं। सभी को देने के बाद एक पूरी खुद भी खा ली। बस, उस दिन के बाद बाल गोबिंद उनके घर आने-जाने लगे और वहाँ साथियों सहित छोले-पूरी खाते। राजा फतह चंद तथा उनकी पत्नी की बेटे की इच्छा भी पूरी हो गई और प्रभु के दर्शनों की लालसा भी। बाद में उन्होंने अपने घर में गुरुद्वारा बनवा दिया जो अब भी 'मैणी संगत' के नाम से प्रसिद्ध है। आज भी इस गुरुद्वारा में संगतों को प्रसाद में छोले-पूरी ही मिलती है।

ऐतिहासिक स्थान–गोबिंद घाट

पंडित शिव दत्त पहले तो ठाकुरों का पुजारी था तथा प्रतिदिन गंगा किनारे प्रातः काल में ठाकुरों की मूर्तियाँ रख कर पूजा करता था। पर जब से उसने अनुभव कर लिया था कि बालक गोबिंद वास्तव में प्रभु की भेजी हुई विशेष आत्मा है तभी से उसने अन्तर्ध्यान होकर उनकी पूजा करनी प्रारम्भ कर दीं। ध्यान लगाकर 'बाला प्रीतम' के दर्शन करता। बालक गोबिंद भी उसकी श्रद्धा देखकर सुबह-सुबह घाट पर आ जाते तथा पंडित शिव दत्त को साक्षात दर्शन देते। जिस दिन बालक गोबिंद नहीं आते, पंडित शिव दत्त शाम को फतह चंद के घर मैणी संगत में पहुँच जाता। कुछ भी हो जाये वह उनके दर्शन किये बिना घर नहीं जाता था। ब्राह्मण लोग शिव दत्त से नाराज हो गये कि उसने ठाकुरों की पूजा के स्थान बालक गोबिंद की पूजा करनी क्यों प्रारम्भ कर दी है, पर शिव दत्त ने किसी की परवाह नहीं की। वह अपनी धुन और श्रद्धा में लगा रहा। उसकी अन्तरात्मा इससे सन्तुष्ट तथा प्रसन्न थी और वह इसी में आनन्द अनुभव करता था।

जिस घाट पर प्रातः काल 'बाला प्रीतम' शिव दत्त को दर्शन दिया करते थे उसका नाम 'गोबिंद घाट' पड़ गया। आजकल वहाँ शानदार यादगार बनी हुई है।
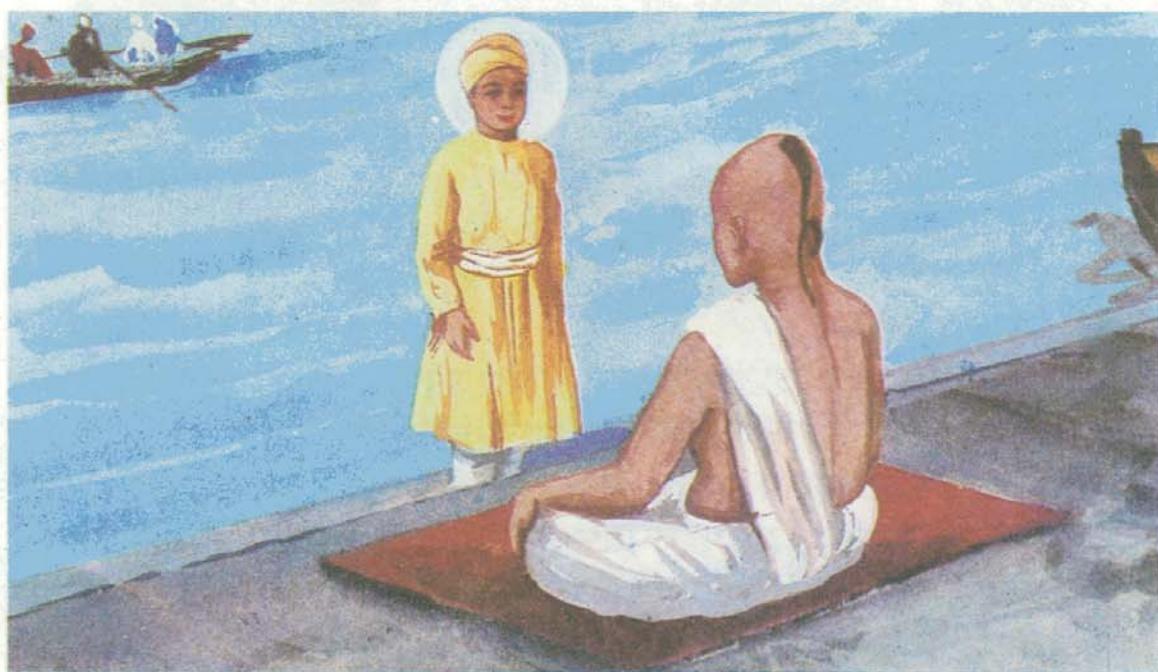
दो नवाब भाइयों पर कृपा दृष्टि हुई

पटना नगर में दो मुसलमान भाई नवाब रहीम बख्स और करीम बख्स रहते थे। पटना शहर के आस-पास उनकी बहुत जमीन-जायदाद तथा कारोबार था। इसी कारण लोग उन्हें नवाब कहते थे। जब गुरु तेग बहादुर पटना शहर में आये और उनके बगीचे में एकान्त देखकर प्रभु भक्ति में लीन हो गये। वह बगीचा सूख रहा था, पर गुरु जी के चरण पड़ने से हरा-भरा हो गया। परमात्मा के भक्तों में इतनी शक्ति तथा खुशहाली देखकर दोनों भाई गुरु घर के श्रद्धालु हो गये।

जब गुरु तेग बहादुर आसाम की ओर चले गये तो उनके पीछे उनके परिवार में बालक गोबिंद जी पटना में विचरण कर रहे थे। इन भाइयों ने गुरु परिवार को पीर-पैगम्बर समझ कर सेवा की। जब बाला प्रीतम पटना से आनन्दपुर साहिब जाने लगे तो ये दोनों नवाब भाई उदास हो गये।

बाल गोबिंद जी ने कहा कि कुछ माँगना है तो माँगो। उन्होंने हाथ जोड़ कर विनती की कि हमारी इच्छा तो आपके दर्शनों की है। तो बाला-प्रीतम ने उत्तर देते हुए कहा—आपको गुरुदेव पिता प्रतिदिन जपुजी का पाठ करने के लिए कह गये थे। अब जब आप जपुजी का पाठ समाप्त किया करेंगे तो उस समय आपको मेरे दर्शन भी हो जाया करेंगे। उन भाइयों ने एक गाँव पुरा तथा जिस बाग में गुरु जी कुछ समय बैठे थे दोनों को गुरु के लंगर के नाम करवा दिया। अब तक यह गुरुद्वारा पटना साहिब के स्वामित्व में है।

जगता सेठ सेवा करके मुक्त हो गया

(भव-सागर पार कर गया)

जगता सेठ भी पटना का एक प्रसिद्ध व्यापारी था। उसकी दुकानें तथा स्टोर देशभर में थे। उस समय ऐसी दुकानों को कोठी तथा उनके मालिक को कोठीदार कहते थे। उसके पास अपार सम्पत्ति थी, पर बेटा नहीं था। पुत्र की इच्छा में उसने तीन विवाह किये, पर किसी से भी बेटा नहीं हुआ। गुरु तेग बहादुर जी जब पटना में आये तब उसने पूरे प्रेम तथा श्रद्धा से उनकी सेवा की। वह प्रतिदिन संगत में आता, कीर्तन सुनता। मन और आत्मा गुरु उपदेश सुनते। उसे मानसिक सन्तुष्टि तथा प्रसन्नता मिलती। एक दिन उसके मन में विचार आया कि यदि गुरु जी अपनी प्रसन्नता और खुशी से उसे पुत्र का उपहार दें तो उसके मन की यह अभिलाषा भी पूरी हो जाये। उसी दिन गुरु जी ने उसे विशेष रूप से अपने पास बुलाकर तीन सेब प्रसाद के रूप में दिये। वह सन्तुष्ट हो गया और घर आकर तीनों पत्नियों को एक-एक सेब खिला दिया।

अगले साल उसके घर तीनों पत्नियों से एक-एक बेटा हुआ। वह तो गुरु तेग बहादुर की पूजा करने लगा। गुरु जी पटना में नहीं थे इसलिए वह तीनों बेटों तथा पत्नियों को लेकर माता गुजरी जी के पास आया। वह बाला-प्रीतम, बालक गोबिंद जी के लिए बहुत से खिलौने तथा वस्त्र लेकर आया। उसने बाला प्रीतम से पूछा 'आप क्या पसन्द करेंगे?' बालक गोबिंद ने तीर-कमान तथा सुन्दर कटार की इच्छा व्यक्त की तो वह दूसरे दिन ही दोनों वस्तुएँ ले आया। जितना समय बालक गोबिंद पटना में रहे जगता सेठ और उनका परिवार प्रतिदिन उनके दर्शनों के लिए आता रहा। वह दर्शन करता तथा बहुमूल्य वस्तुएँ भेंट करके प्रसन्न होता।

जब बाल गोबिंद जी पटना से चलने लगे तो जगता सेठ ने उनके स्थान-स्थान पर स्वागत तथा ठहरने का प्रबन्ध अपनी दुकानों तथा स्टोरों के माध्यम से किया। उचित प्रबन्ध के लिए उसके आदमी पहले ही चले गये। जब पटना से साहिबजादा गोबिंद सिंघ चलने लगे तो जगता सेठ परिवार सहित उपस्थित हुआ और कहने लगा कि हमें आपके दर्शन किस तरह होंगे तो साहिबजादा गोबिंद जी ने कहा 'प्रतिदिन गुरुद्वारा संगत में आना। संगत में आप सदा मेरे दर्शन करेंगे।
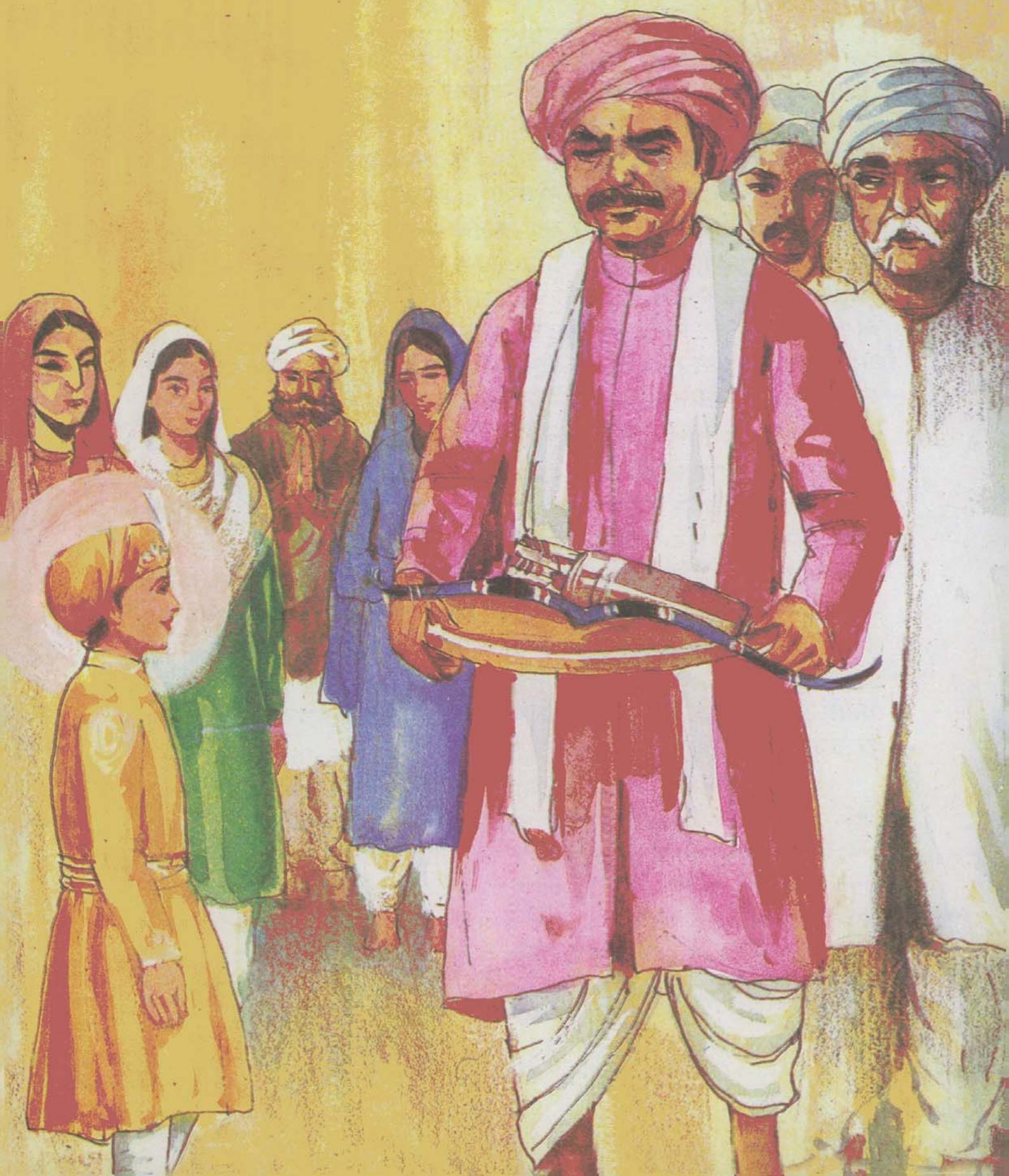
गुरु परिवार का पटना से कूच करना

गुरु तेग बहादुर जी आसाम से लौटने के बाद साहिबजादा के दर्शन करने के उपरान्त 23 दिन पटना में ठहरे। वे फिर आनन्दपुर साहिब चले गये तथा परिवार को कुछ समय और पटना में रुकने का आदेश दे गये।

बाल गोबिंद जी जब पाँच वर्ष से भी अधिक आयु के हो गये तो यह कहना प्रारम्भ कर दिया कि अब यहाँ अधिक नहीं रहना है और पिता जी के पास जाना है। इन्हीं दिनों में आनन्दपुर साहिब से गुरु जी का संदेश आ गया कि परिवार साहिबजादा को लेकर आनंदपुर आ जाये। यह आदेश मिलते ही परिवार ने पटना से कूच करने की तैयारियाँ प्रारम्भ कर दीं। जब शहर में गुरु घर के प्रेमियों, संगत तथा विशेष रूप से उन लोगों को जो साहिबजादा गोबिंद सिंह से बहुत प्यार करते थे, इस बात का पता चला तो वे बहुत उदास तथा निराश हो गये। जो भी मिलने आता, दर्शन करते ही आँखें भर आतीं। राजा फतह चंद तथा उसकी पत्नी बाल गोबिंद को आलिंगन में लेकर इस तरह रोये जैसे कोख से जन्मे बच्चे से अलग होने पर माँ-बाप रोते हैं।

बाल गोबिंद ने एक कृपाण, एक कटार तथा अपनी पोशाक उनको निशानी के रूप में दी और कहा कि जब मन अधिक उदास हो तो इनके दर्शन करें। मेरे साथियों को पहले की तरह ही प्यार से बुलाकर पूरी-छोले खिलाते रहना। उन्होंने रोज शाम को बच्चों को बुलाकर पूरी-छोले खिलाने प्रारम्भ कर दिये।

पंडित शिवदत्त को भी जब उदास तथा निराश देखा तो बाल गोबिंद ने उसे आलिंगन में लेकर कहा– 'शिवदत्त! तुझे सुबह की पूजा के समय दर्शन हुआ करेंगे। तेरा कल्याण हो गया है। इसी तरह एक और महापुरुष जैता भगत को बाला प्रीतम ने धीरज देते हुए कहा कि प्यार से सुबह परमात्मा का नाम जपना तथा प्रभु भक्ति को ही जीवन का आधार बनाना। नाम जपते रहोगे तो उस समय मुझे अपने पास बैठा हुआ अनुभव करोगे।'

फिर संगत की ओर से अरदास हुई तो बाला प्रीतम ने कहा– 'साध संगत जी! मेरे शरीर का दर्शन करना चाहो तो मैं अपना खटोला (पालना) छोड़ कर जा रहा हूँ। जिसका जी उचाट हो दर्शन कर लिया करे। यदि मेरी आत्मा का दर्शन करना चाहो तो प्रात: काल दीवान में आकर शब्द में मन लगाओ तो मन में मेरे दर्शन हो जायेंगे।'

जब गुरु परिवार और बाल गोबिंद पटना से चले तो सजल नेत्रों के साथं बड़ी संख्या में संगत उन्हें शहर से दूर तक छोड़ने आई।
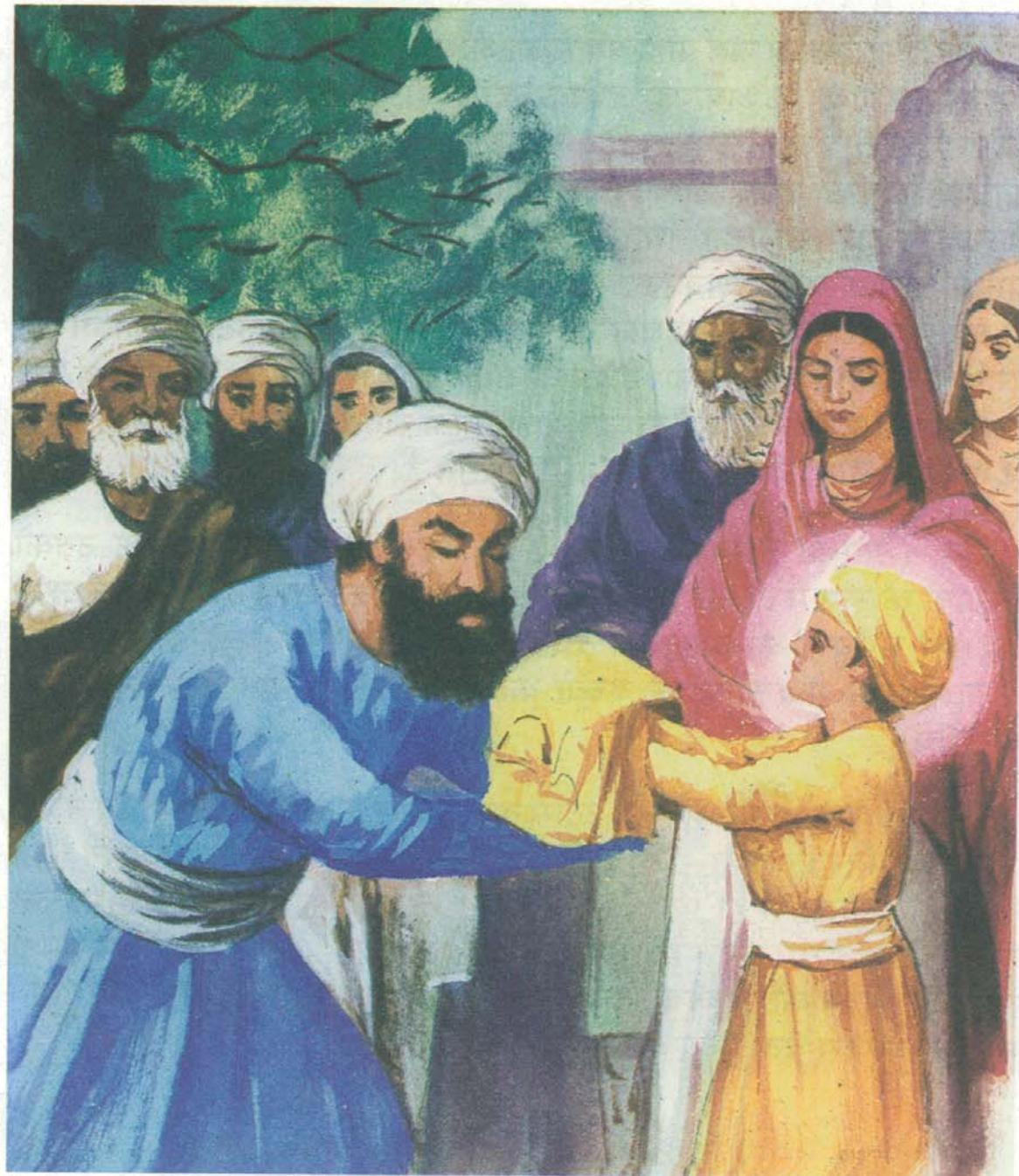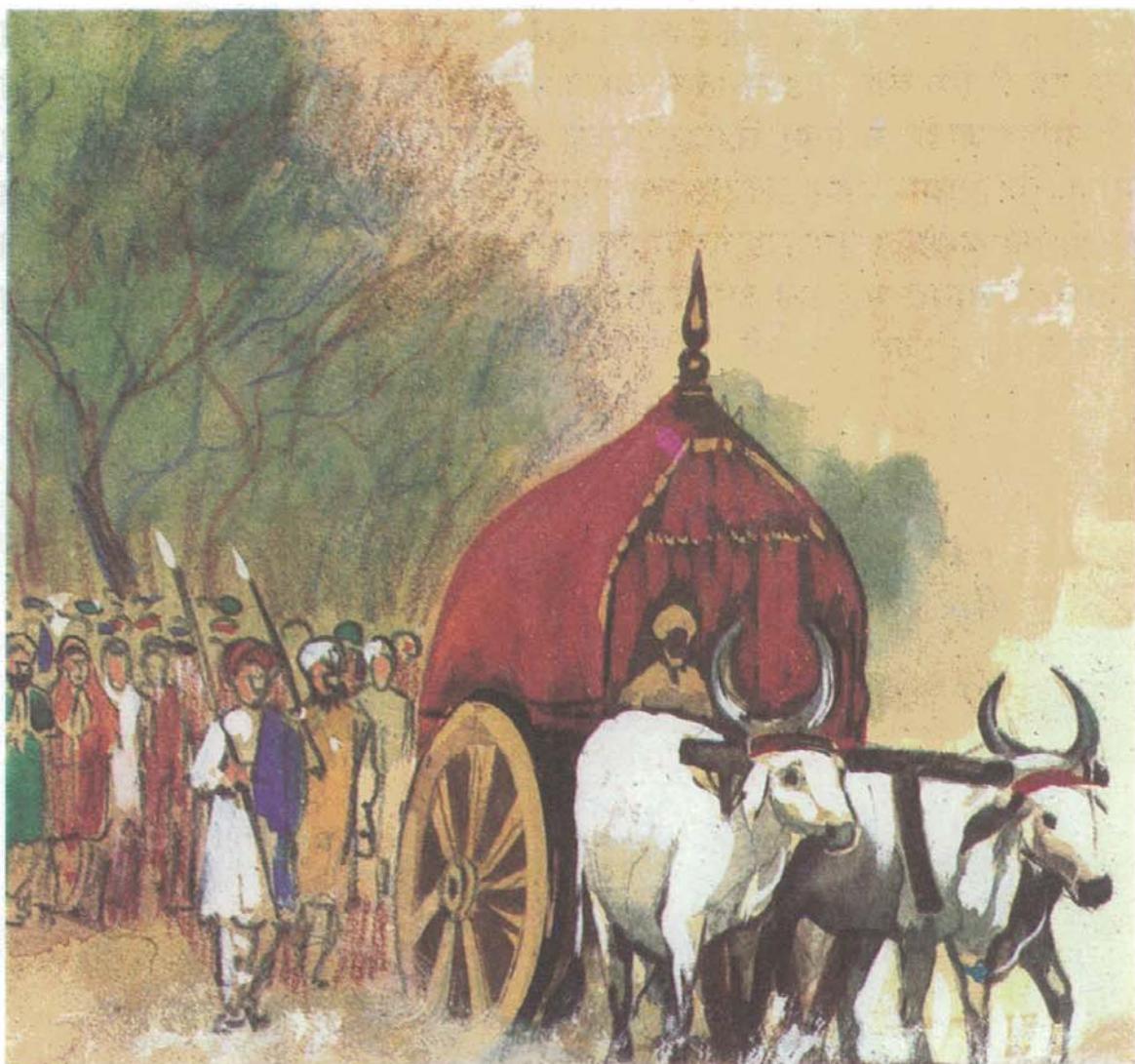
बाला प्रीतम दानापुर पहुँचे

गुरु परिवार पटना से चला, पूरा काफिला उनके साथ था। बाला प्रीतम एक पालकी में सवार थे। माता नानकी तथा माता गुजरी पालकी में तथा अन्य साथी बैल गाड़ियों पर सवार थे। पटना की संगत पहला पड़ाव दानापुर तक शब्द-कीर्तन करती हुई साथ आई। यह स्थान पटना से बीस मील की दूरी पर है। यहाँ जगता सेठ की दुकान भी थी। उसने सभी के ठहरने का प्रबन्ध किया था। पर बाला प्रीतम कहने लगे कि यहाँ पर एक माई (स्त्री) है, जिसने गुरुदेव

पिता श्री गुरु तेग बहादुर को हांडी में खिचड़ी पका कर खिलाई थी। वे याद ही कर रहे थे कि वही माई संगत में आ गई। उसने विनती की कि वह उसी हांडी में साहिबजादा के लिए खिचड़ी पका कर लाई है तथा शेष संगत के लिए दाल-रोटी तैयार है। माई ने गुरु तेग बहादुर जी के खिचड़ी खा लेने के बाद उस हांडी को सम्भाल कर रख लिया था। जब साहिबजादा श्री गोबिंद सिंघ जी ने खिचड़ी खाकर माई को आर्शीवाद दिया तो उसने अपने घर को गुरुद्वारा का रूप दे दिया जिसे अब भी 'हांडी वाली संगत' कहते है।
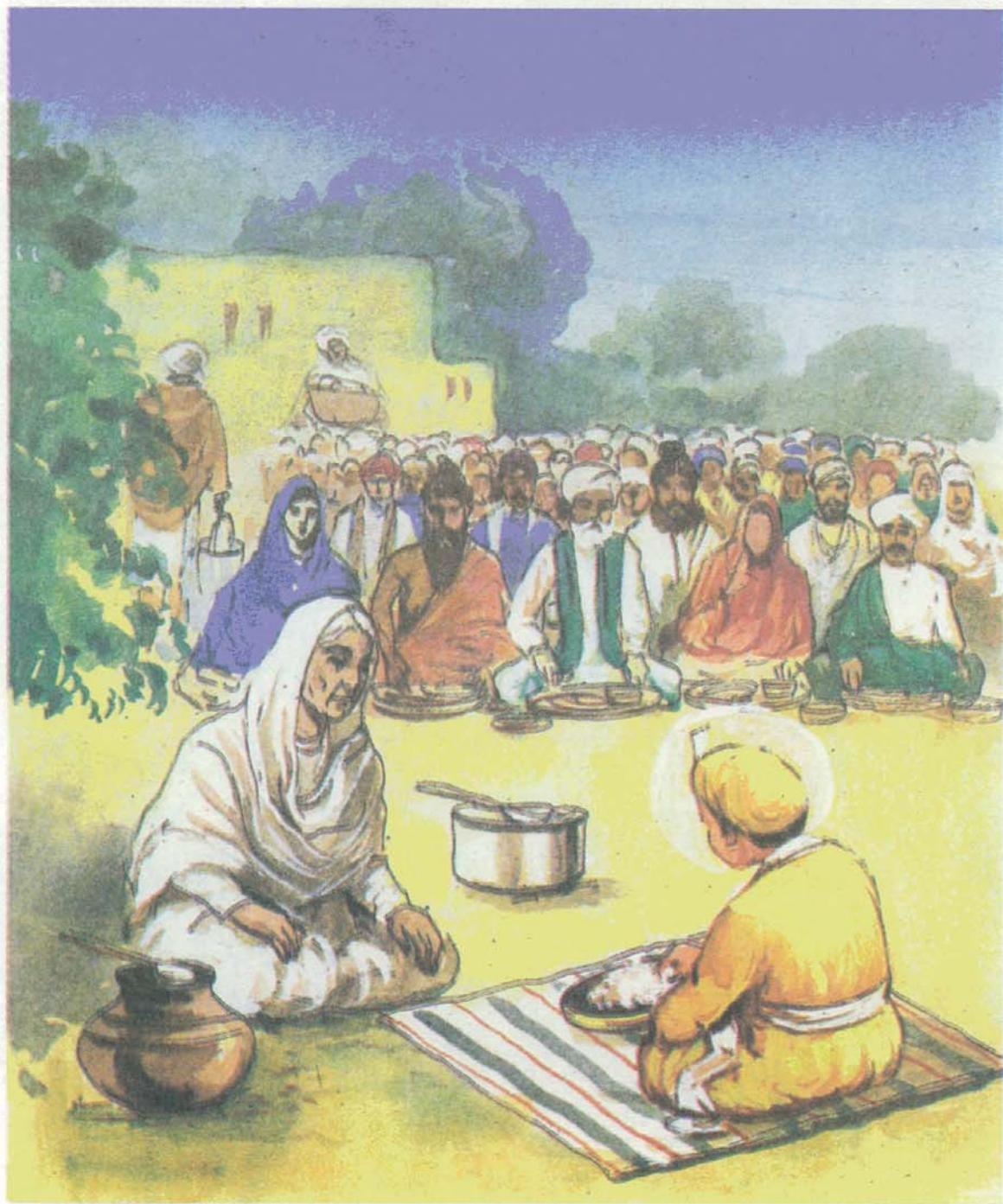
गुरु परिवार काशी पहुँच गया

उस समय तक पूरे देश में गुरु नानक के इस घर तथा गुरु तेग बहादुर जी की ख्याति इतनी फैल चुकी थी कि उन्हें हर नगर तथा हर गाँव में रुकना पड़ता। संगत को दर्शन देते और कीर्तन का प्रवाह चलता रहता। रास्ते में थोड़ा-थोड़ा समय वे वहीं रुकते जहाँ रात होती। इस तरह दानापुर से चलकर कई दिनों के बाद काशी पहुँचे, जो देश में पुरातन प्रसिद्ध तीर्थ-स्थल है। गुरु तेग बहादुर यहाँ कई महीनों तक रुके थे। वह गुफा जहाँ उन्होंने तप किया था आज भी गुरुद्वारा के रूप में विद्यमान है। यहाँ ही बाला प्रीतम ने पुनः डेरा डाला।

उस समय यहाँ का सिख मत का मुखिया भाई गुरबख्स था। वह संगत सहित बहुत सी वस्तुएँ भेंट स्वरूप लेकर आया। बाला प्रीतम सभी की भेंट स्वीकार करते तथा साथ-साथ ही जरूरतमंदों के बीच उन वस्तुओं को बाँट देते। जब भाई गुरबख्स ने विनती की कि आप सभी कुछ तो बाँट रहे हो, आप भी कुछ स्वीकार करें तो बाला प्रीतम ने मुस्करा कर कहा कि आप प्रसन्न हैं कि प्रेम से लाये उपहार को मैं स्वीकार कर रहा हूँ और हमारी खुशी इसमें है कि ये वस्तुएँ जरूरतमंदों तक पहुँच जाएँ। यह बातें सुनकर सभी हैरान हो गये थे। सभी बाला प्रीतम को नमस्कार करने लगे। वे कई दिन यहाँ रहे। बड़े-बड़े विद्वानों से विचार-विमर्श हुआ। इसी काशी का दूसरा नाम बनारस है।
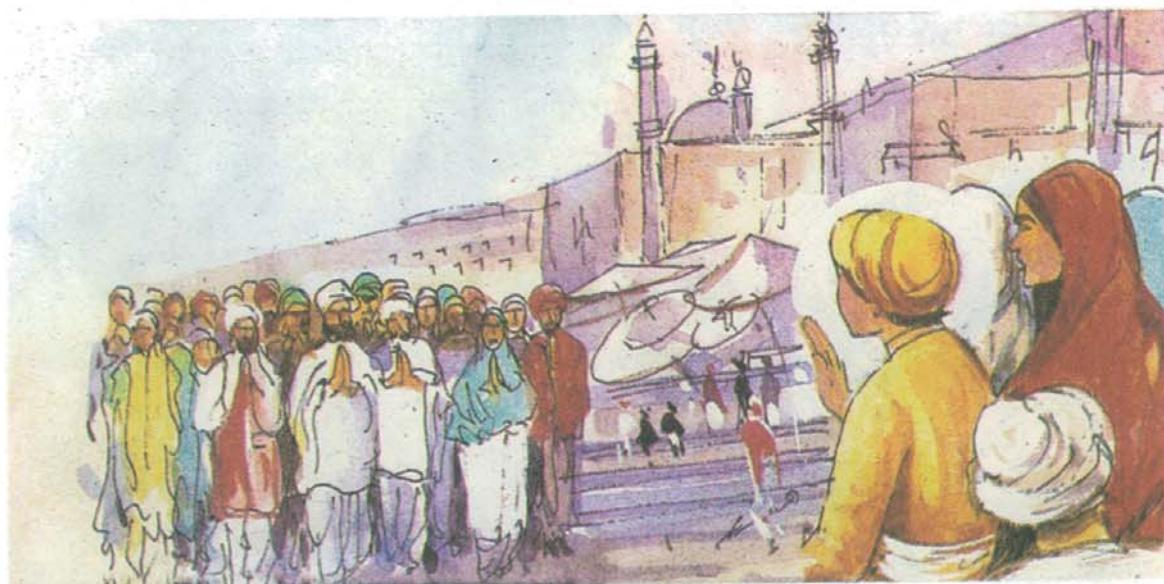
अयोध्या में जब बन्दर आये

साहिबजादा श्री गोबिंद जी बनारस से प्रयाग पहुँचे जहाँ गंगा और यमुना नदियों का मिलन होता है तथा तीसरी नदी सरस्वती जमीन के अन्दर से मिलती है। इसी कारण इसे त्रिवेणी कहते हैं। अब इस शहर का नाम इलाहाबाद रखा गया है। गुरु तेग बहादुर पटना जाते समय अहला माधापुर नामक स्थान पर ठहरे थे उसी स्थान पर बाला प्रीतम भी ठहरे। यहाँ सिख संगत बहुत थी। यहाँ भी एक सेठ को बाला प्रीतम ने आशीर्वाद दिया और उसके घर पुत्र ने जन्म लिया। जहाँ गुरु परिवार ठहरा था उसने वहाँ गुरुद्वारा का निर्माण करवाया। उसके साथ उसने एक बगीचा तथा लंगर के लिए काफी रकम भी दी। अभी तक यह एक प्रसिद्ध गुरु स्थान है।

यहाँ कुछ समय रहकर तथा दोनों समय दीवान लगाकर और कीर्तन का प्रवाह चलाकर गुरु परिवार अयोध्या आ गया। जहाँ श्री राम चन्द्र जी का जन्म हुआ था। यह अवध देश की राजधानी थी जहाँ किसी युग में सूर्यवंशी राजाओं का राज्य था। बाला प्रीतम ने उसी वशिष्ठ कुंड के पास डेरा लगाया जहाँ कभी गुरुदेव पिता तेग बहादुर जी ठहरे थे। यहाँ एक विचित्र घटना घटित हुई जिसकी चर्चा पूरे शहर में हुई। इससे बड़ी संख्या में लोग दर्शनों के लिए आने लगे। साहिबजादा श्री गोबिंद जी जिस स्थान पर बैठे थे वहाँ बहुत से बन्दर इकट्ठा हो गये। पर वे मनुष्यों की तरह ही माथा टेकते और एक तरफ बैठ जाते। उनके बाद दो बन्दर और आये जो अपने साथ फल लेकर आये थे। उन्होंने वे फल बाला-प्रीतम के समक्ष रखे और माथा टेक कर एक तरफ बैठ गये। जितने दिन गुरु परिवार यहाँ रहा, बाला-प्रीतम के दर्शनों के लिए संगत आती रही और बन्दर भी आते रहे। इससे राम उपासकों में यह बात फैल गई कि यह कोई साधारण बालक नहीं बल्कि श्री राम चन्द्र जी स्वयं ही आ गये हैं।
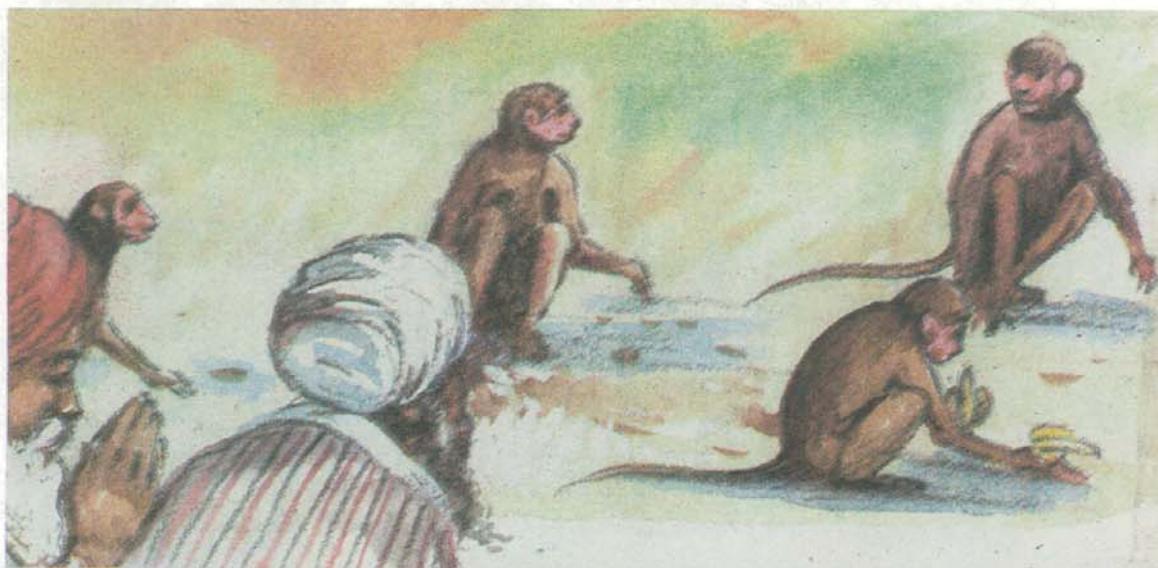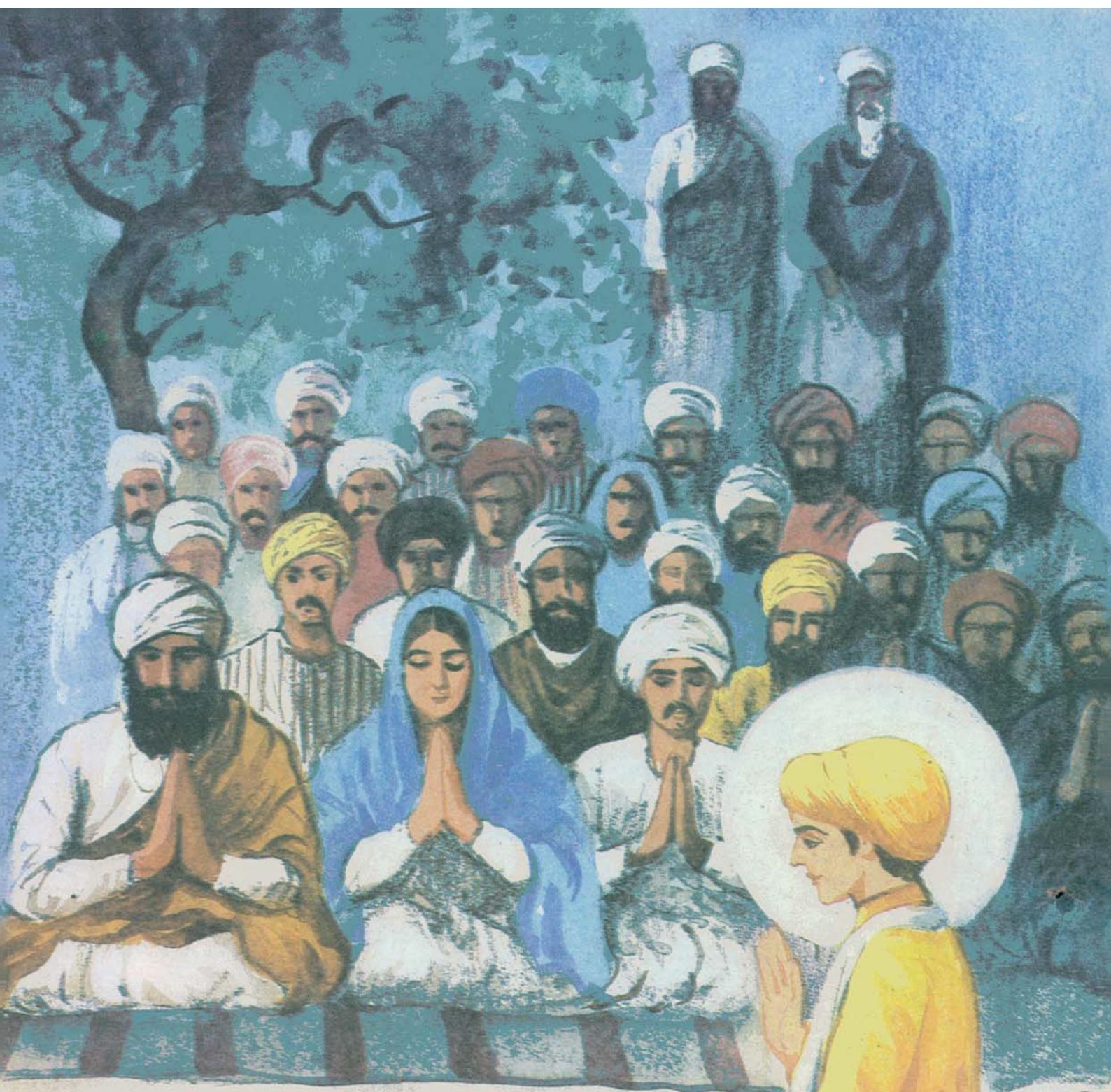
गुरु परिवार अयोध्या से चलकर नानकमता, पीली भीत, देवनगर, लखनऊ, बनूर, मथुरा, आगरा, हरिद्वार से होता हुआ अम्बाला के समीप लखनौर पहुँच गया। यहाँ ही गुरु तेग बहादुर जी का संदेश पहुँच गया था कि कुछ समय लखनौर में ही ठहरना। इसलिए कई महीने गुरु परिवार लखनौर में ही रहा। यहाँ आस-पास तथा दूर से भी संगत दर्शन के लिए आने लगी। यहाँ सभी का यही विचार था कि बाला प्रीतम अपने दादा गुरु हरिगोबिंद साहिब की तरह बड़े शूरवीर और तेज वाले होंगे। बाला प्रीतम ने अब घुड़सवारी भी प्रारम्भ कर दी थी। पटना की तरह यहाँ भी बच्चों को इकट्ठा करके रण कौशल के ढंग समझाते तथा शस्त्र-प्रदर्शन करते। पगड़ी पहन कर उनका व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावशाली प्रतीत होता।
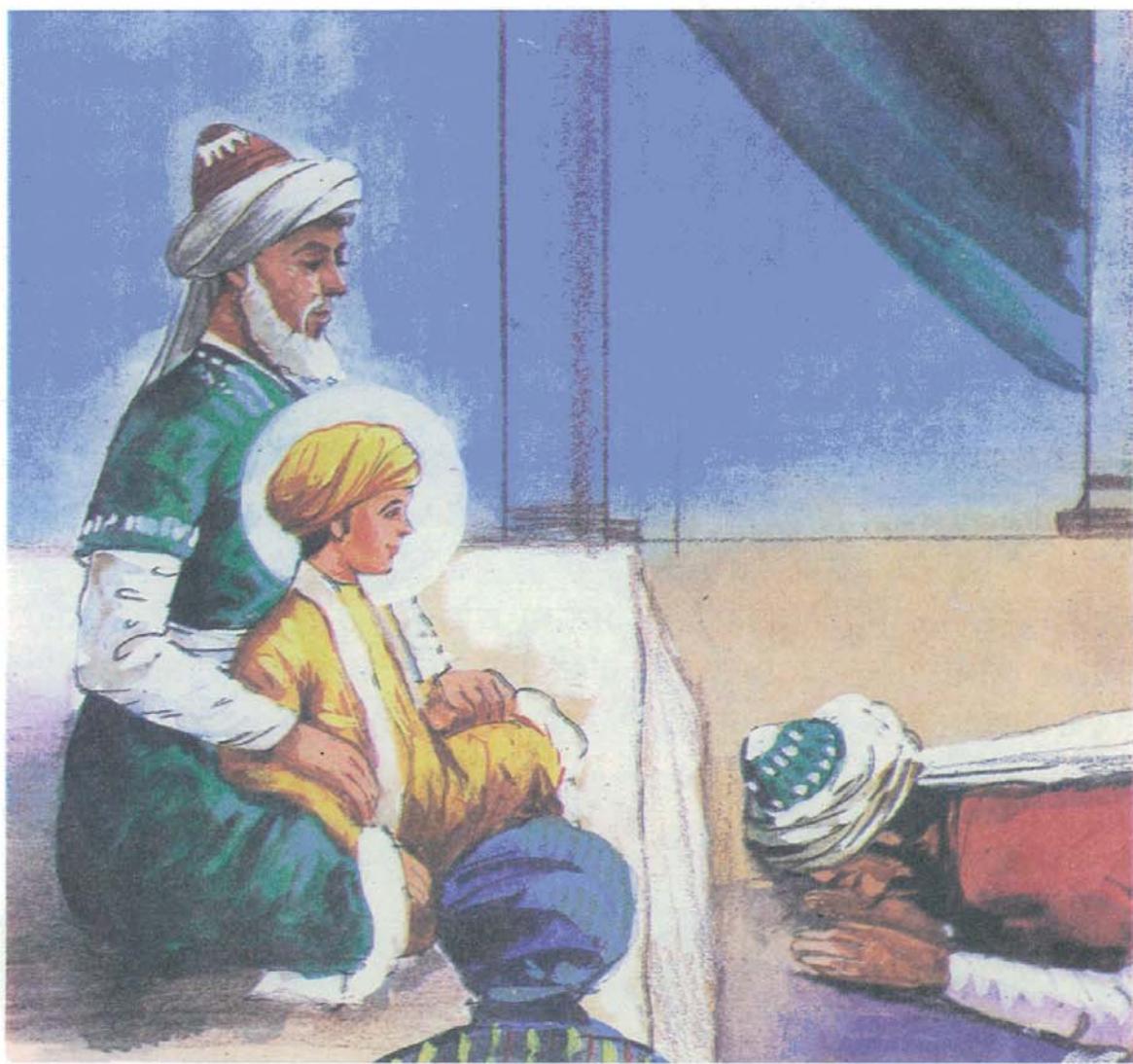
यहाँ भी गाँव में पानी खारा था। माता गुजरी के आशीर्वाद से नया कुआँ खोदा गया जिसका पानी मीठा निकला। बाला प्रीतम की इच्छा से यहाँ एक बावड़ी भी तैयार करवाई गई। यह दोनों यादगारें अभी तक है। भीखण शाह यहाँ फिर से दर्शन के लिए आया। उसने माथा टेक कर बाला-प्रीतम को गोद में ले लिया। एक ओर ले जाकर वह काफी देर बातें करता रहा और अन्त में उसने इच्छा व्यक्त की कि वे उसे आशीर्वाद दें जिससे उसका डेरा आबाद रहे। बाला प्रीतम ने उसे आशीर्वाद दिया। यह वही भीखणशाह है जो पटना गया था। पीर मीरदीन ने भीखण शाह को कहा कि मुसलमान होकर हिन्दू बालक की वंदना करता है। भीखण शाह ने उत्तर देते हुए कहा– 'यह साधारण बालक नहीं है, परमात्मा का पुत्र है।' इसी तरह पीर आरफ दीन ने भी परमात्मा की ज्योति पहचान कर बाला प्रीतम की वंदना की।

बाला प्रीतम आनन्दपुर पहुँचे

लखनौर से चल कर गुरु परिवार कीरतपुर पहुँचा और वहाँ एक रात ठहरा। यहाँ बहुत से खानदान तथा परिवार बसते थे। उनसे मिलकर खुशियाँ बाँटी। गुरु-स्थानों के दर्शन किये और अगले दिन आनन्दपुर के लिए चल पड़े। आनन्दपुर की संगत कीर्तन करती हुई स्वागत के लिए नगर से बाहर आ गई। सभी ने बाला-प्रीतम के दर्शन किये। शब्द कीर्तन तथा पुष्प वर्षा में गुरु परिवार आनन्दपुर पहुँचा। बाला प्रीतम ने गुरु देव पिता को माथा टेका। गुरु तेग बहादुर जी ने बड़े प्यार से उन्हें उठा कर छाती से लगा लिया।

दीवान चल रहा था। गुरुबाणी का मनोहर कीर्तन हो रहा था और बाला-प्रीतम अपने गुरु देव पिता की गोदी में बैठे हुए थे। बड़ी संख्या में सिख संगत बाला प्रीतम के दर्शन करके आनंदित हो रही थी।

आनन्दपुर में बाला प्रीतम के कौतुक

गुरु तेग बहादुर अपने साहिबजादा को बहुत प्यार करते थे। उन्होंने बाला प्रीतम को विद्या में निपुण करने के लिए हर भाषा के अध्यापक लगा दिये जो गुरु घर में ही पढ़ाने के लिए आते थे। पर साहिबजादा गोबिंद जी अकेले पढ़ने वाले नहीं थे। उन्हें हर समय किसी का साथ चाहिए था और साथी हर समय उनके साथ होते थे। इसलिए घर में वे अकेले विद्यार्थी नहीं थे और भी कई विद्यार्थी थे। इस तरह घर एक पूरी पाठशाला बन गया।

जो पहले से ही पढ़ कर आया है उसे किसी ने क्या पढ़ाना है। फिर भी विभिन्न भाषाओं के शब्दों तथा लिपि का ज्ञान कराना आवश्यक था। इसके साथ ही गुरु तेग बहादुर जी जानते थे कि भविष्य में उसने किस तरह के कार्य करने हैं। इसलिए उसी तरह का प्रशिक्षण उन्हें दिया जाने लगा। शस्त्र विद्या, घुड़सवारी, तीर चलाना, गतका खेलना तथा बंदूक चलानी सिखाने के लिए अध्यापक रख दिये।

साहिबजादा को गुरमुखी तथा फारसी अक्षरों का ज्ञान हर जस राय ने कराया जो भाई मति दास का भतीजा था। फारसी की उच्च शिक्षा के लिए पीर मुहम्मद काजी को नियुक्त किया गया। घर की पाठशाला में आपके साथ विद्या लेने वालों में भाई मनी सिंह, तारा आलम, कीर्तिया, शाम दास, गुलाब राय, मोहरी चंद तथा संगो के नाम लिखे हुए मिलते हैं। इतिहासकार लिखते हैं कि बालक गोबिंद जी जो एक बार सुन लेते उसे कभी नहीं भूलते थे। आपके कई खेल निश्चित किये गये। आप जब नदी किनारे जाते तुरन्त छलांग लगाकर तैरना प्रारम्भ कर देते। इसी तरह वे अधिक उत्साह तथा शारीरिक बल का प्रदर्शन करने वाले खेलों में रुचि लेते।

कश्मीरी पंडित आनन्दपुर आये

यह घटना 1675 ई॰ की है। उस समय भारत में औरंगजेब का राज्य था। वह हिन्दुओं को जबरदस्ती (बलपूर्वक) मुसलमान बनाने लगा। जगह-जगह मन्दिर गिरा कर मस्जिदों का निर्माण होने लगा। हिन्दुओं के धार्मिक चिह्न जनेऊ तथा तिलक उतारे जाने लगे। जब मुगल बादशाह के इस आदेश का कश्मीर का गवर्नर अधिक सख्ती से पालन करने लगा तब कश्मीर के पंडितों का एक प्रतिनिधि मंडल इस संकट का समाधान ढूंढने के लिए गुरु तेग बहादुर जी के दरबार आनन्दपुर आया। उन्होंने आकर अपनी समस्या तथा दुख को बताया। गुरु साहिब ने सोचा कि यदि इन्हें कोई मार्ग न बताया तो ये धर्म त्याग देंगे या मारे जायेंगे। इसलिए गुरु तेग बहादुर जी ने कहा कि यह संकट तभी टलेगा जब कोई महापुरुष या आत्मा इस अत्याचार के विरुद्ध अपना बलिदान देगा।

इसी समय नौ साल के बालक गोबिंद अपने पिता के पास बैठ कर बड़ी गम्भीरता के साथ पूरी बात सुन रहे थे। उत्तर सुनकर वे बोले–'आप से बड़ी आत्मा और कौन-सी है।' गुरु तेग बहादुर जी अपने लाडले बेटे से यह सुनना

ही चाहते थे, इसलिए उन्होंने तुरन्त कहा– 'जाओ, जाकर कश्मीर के हाकिम द्वारा यह संदेश दिल्ली पहुँचा दो कि यदि गुरु तेग बहादुर को धर्म परिवर्तन के लिए तैयार कर लिया जाये जो हम सभी हिन्दू धर्म परिवर्तन कर लेंगे, इस्लाम कबूल कर लेंगे।'

कश्मीरी पंडित संतुष्ट हो गये और नमस्कार करके चले गये। गुरु तेग बहादुर ने उसी समय आदेश दिया कि उनकी यात्रा की तैयारी की जाये। हम दिल्ली से बुलावा आने से पहले ही जाना चाहते हैं। बाला प्रीतम श्री गोबिंद राय की ओर देखकर बड़े प्यार से उन्हें थपथपाया और कहा कि उत्तरदायित्व सम्भालने के लिए वे तैयार हो जायें। कश्मीरी पंडितों के वापस जाने के कुछ दिनों बाद ही गुरु जी आनन्दपुर से काफी संगत के साथ चल पड़े।

गुरु तेग बहादुर जी की शहीदी

गुरु तेग बहादुर जी आनन्दपुर से चल कर लोगों को 'न किसी से डरो तथा न किसी को डराओ' का उपदेश देते हुए मालवा के कई स्थानों पर ठहरते हुए अन्त में आगरा पहुँचे, जहाँ उन्हें गिरफ्तार करके दिल्ली लाया गया। दिल्ली में उन्हें वर्तमान कोतवाली (अब गुरु तेग बहादुर निवास) में ही कैद किया गया। उस समय भी इसी स्थान पर दिल्ली के कोतवाल का केन्द्र था। तत्कालीन मुगल सरकार ने हर उपाय किया, सभी तरह का जोर लगाया कि गुरु तेग बहादुर धर्म परिवर्तन कर लें। जब आप किसी तरह से भी नहीं झुके तथा न ही माने तो अंत में काजी द्वारा कत्ल का फतवा दिलवाया गया।

उन्हें प्रभावित करने तथा सरकार की सख्ती दिखलाने के लिए पहले उनके कैद खाने के सामने उनके साथी सिख सेवादार में से भाई मतीदास को आरा से चीर कर, दो फांक करके शहीद किया गया। भाई दयाला को उबलती देग में बैठा कर शहीद किया गया तथा भाई मती दास को शरीर के आसपास रुई बाँध कर तथा उसमें आग लगाकर शहीद किया गया। इसके उपरान्त गुरु तेग बहादुर जी को कैद खाने से बाहर निकाल कर कुएँ के वृक्ष के नीचे बैठा कर तलवार से शीश धड़ से अलग करके शहीद किया गया।
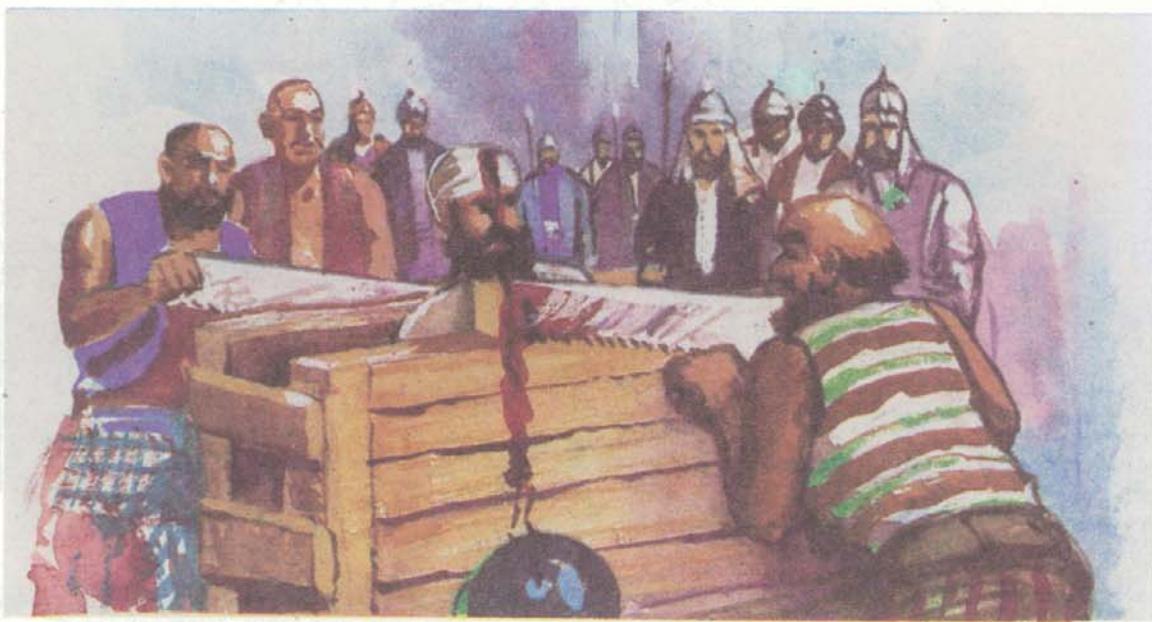
दिल्ली में लाल किला के सामने इस शहीदी स्थान पर सीसगंज गुरुद्वारा बना हुआ है जहाँ गुरु तेग बहादुर जी शहीदी से पूर्व बैठे थे। गुरुद्वारा के अन्दर गुरु ग्रंथ साहिब के प्रकाश स्थान के नीचे वह स्थान है जहाँ आप शहीदी के समय पालथी मार कर बैठे थे।
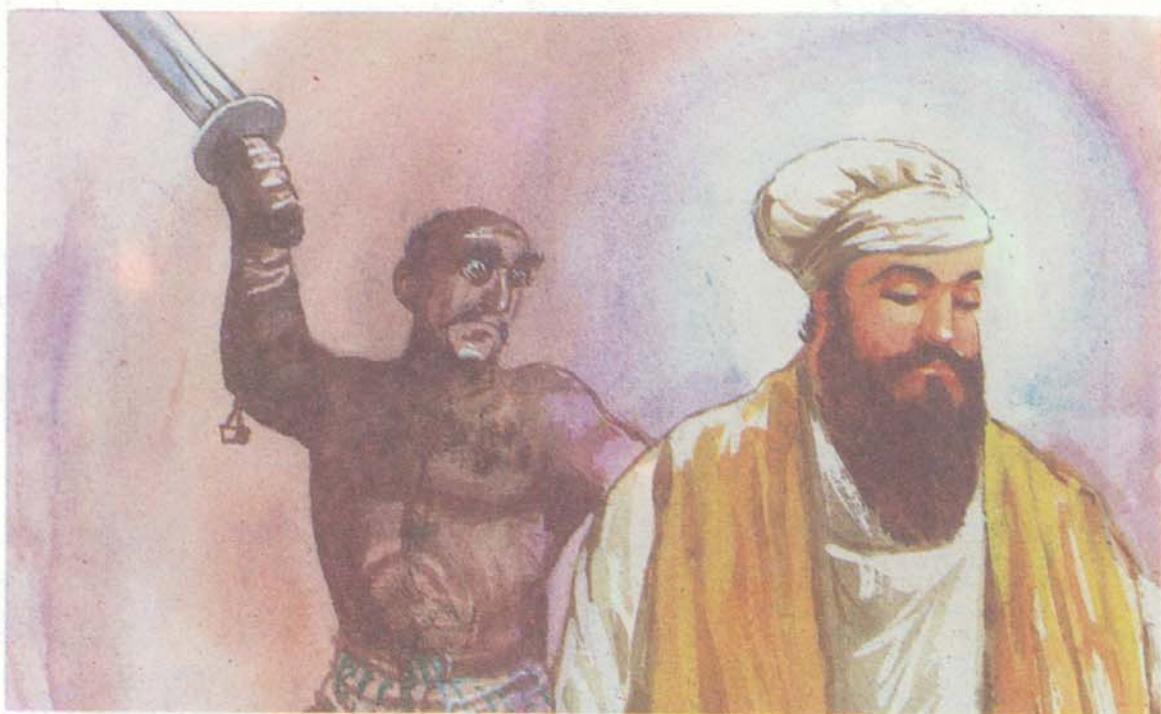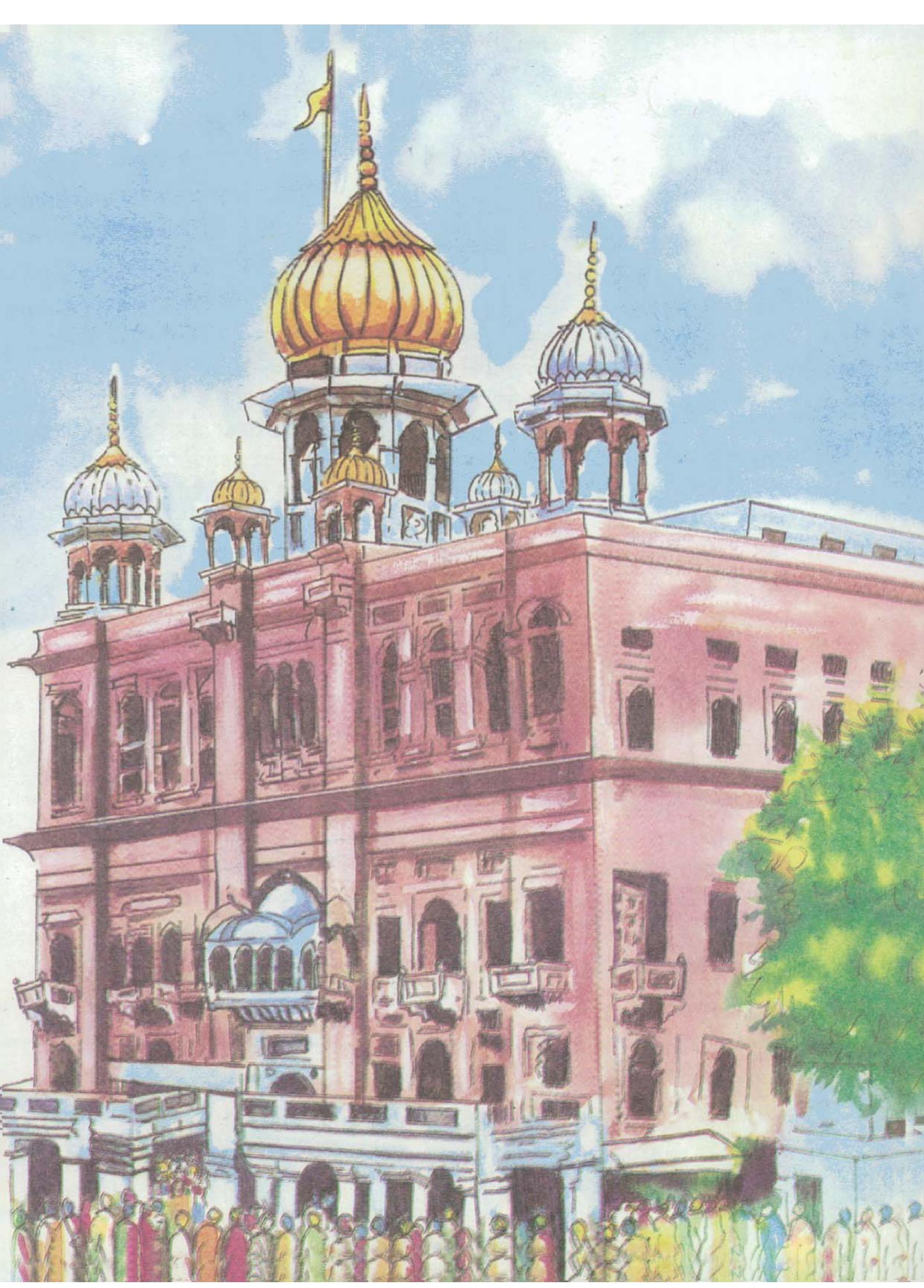
आनंदपुर में सीस का अन्तिम संस्कार

जब चाँदनी चौक दिल्ली में गुरु तेग बहादुर जी को शहीद किया गया तो उस समय सरकार की ओर से यह चेतावनी भी दी गई थी कि कोई शीश या शरीर न उठाये। जो गुरु का सिख आगे आयेगा उसे भी कत्ल कर दिया जायेगा। उस समय आस-पास बहुत भीड़ थी इसलिए कोई आगे नहीं बढ़ा जबकि वहाँ उपस्थित कई सिख शहीदी की इस ऐतिहासिक घटना को देख कर दुखी हो रहे थे।

कुछ समय उपरान्त जब भीड़ छट गई तो भाई जैता तथा भाई ऊदा तेजी से आगे बढ़े। गुरु तेग बहादुर जी का शीश उठाया, नमस्कार किया और एक चादर में लपेट कर दौड़ पड़े। अधिकारियों को जब पता लगा तो उन्होंने पीछा किया पर उन्हें पता नहीं लग सका कि वे किस तरफ से तथा कैसे दिल्ली से बाहर निकल गये।

दोनों, दिन रात यात्रा करते, रास्ते में गुरु घर के श्रद्धालुओं के पास ठहरते हुए वे कीरतपुर साहिब पहुँचे और वहाँ से आनन्दपुर साहिब संदेश भेजा। जब शीश लेकर भाई जैता और भाई ऊदा आनंदपुर पहुँचे तो सारी सिख संगत, बाला प्रीतम श्री गोबिंद जी, माता गुजरी तथा परिवार के अन्य सदस्य शहर से बाहर काफी आगे आकर मिले। दोनों सिखों ने शीश गुरुदेव पिता के साहिबजादा की गोद में रखा। वह दृश्य बड़े-बड़े पत्थर दिल भी देख नहीं सकते थे।

गुरु तेग बहादुर जी के शीश का संस्कार बड़े सम्मान, शोक, प्रेम तथा अश्रुपूर्ण नयनों के साथ किया गया। इस संस्कार स्थान पर गुरुद्वारा सीसगंज, आनन्दपुर में बना हुआ है।